१४ - कब्र से आती आवाज़ें

1

क्या जीवित मृतकों से बातें कर सकते हैं?

2

जब लोग मर जाते हैं तो क्या वे आत्माओं के रुप में जीवितों सें मिलने आते हैं? क्या मृतकों की आत्माएं वापस आने और जीवितों से बातें करने में समर्थ हैं? मृत्यु के समय क्या केवल देह मरती है और आत्मा जीवित रहती है?

3

क्या आत्मवादी, ब्रह्मावादी, और माध्यम सही हैं जब वे कहते हैं कि वे प्रियजनों की आत्माओं से हमारा सम्पर्क करवा सकते हैं?

4

क्या मृतकों की आत्माएं जीवित लोगों में प्रवेश करके उनकी देहों, आवाज़ों, मस्तिष्कों का प्रयोग बोलने और कार्य करने के लिए कर सकती हैं?

5

इस समय हम जो बात कर रहें हैं सर्वाधिक गंभीर विषयों में से एक है जिसका हम में से किसी को भी सामना करना पड़ सकता है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

6

और यह इतनी गंभीर है कि इसे जीवन और मृत्यु का विषय कहा जा सकता है। हमारा अनन्त उद्धार दांव पर है। इसलिए हमें इसके विषय ज्ञान होना ही चाहिए।

हम पूरी निश्चियता से कैसे जान सकते हैं कि हमारा अनुभव सही और वास्तविक है या झूठा और खतरनाक?

7

इन प्रश्नों का उतर यह है कि बाइबिल में यीशु हमें सच्चाई बताते हैं!

8

यीशु हमारे मित्र हैं। वे समझते हैं कि जब हम मृत्यु की घाटी में किसी प्रिय को खो देते हैं तो हम किस स्थिति से गुजरते हैं। उन्हें हमारे दु:ख से सहानुभूति है। उन्होंने हमारा दु:ख देखा है। इसलिए हम यीशु की ओर मुड़ेंगे और देखेंगे कि उन्होंने मृत्यु, पुनरुत्थान, और अनन्त जीवन के विषय में क्या कहा है? जो कुछ यीशु ने कहा है, उस पर मैं विश्वास करूंगा। क्या हम और आप इस बात पर सहमत हो सकते हैं?

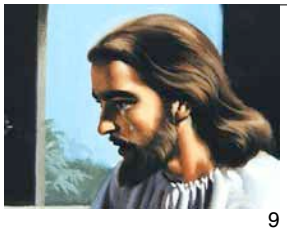

9

क्या आप यीशु के धन्यवादी नहीं हैं? उन्हें हमारे दुख से सहानुभूति है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

10

(मूलपाठः यूहन्ना ११:३५)

बाइबिल कहती है कि एक मित्र की मृत्यु पर "यीशु रोया।"

यूहन्ना ११:३५

वे स्वयं भी दुख की घाटी से होकर गुजरे थे।

11

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १:१७, १८)

"मत डर, मैं प्रथम और अन्तिम हूँ।

12

और जीवता हूँ मैं मर गया था, और अब देख मै युगानुयुग जीवता हूँ। आमीन।

13

और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास है।"

प्रकाशितवाक्य १:१७, १८

इससे भी अधिक यीशु जीवन दाता हैं। वे इसलिए आए कि हम अब बहुतायत से नया जीवन पायें।

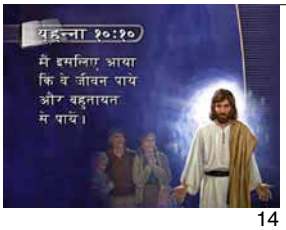

14

(मूलपाठः यूहन्ना १०:१०)

"मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाये और बहुतायत से पायें।"

यूहन्ना १०:१०

सदैव के लिए वह एक पूर्णतया नए जीवन का वचन देता है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

15

(मूलपाठः यूहन्ना ११:२५)

"यीशु ने उससे कहा पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाये तौभी जीएगा।"

यूहन्ना ११:२५

यीशु जीवन के विशेषज्ञ हैं। वे इसके विषय में विश्व के किसी भी व्यक्ति से अधिक जानते हैं क्योंकि उन्होंने ही इस ग्रह पर जीवन का सृजन किया।

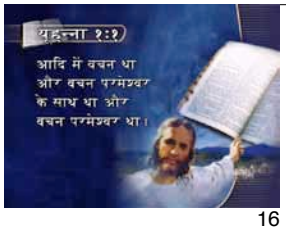

16

(मूलपाठः यूहन्ना १:१,३)

"आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था।

17

"सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।" यूहन्ना १:१,३

18

(मूलपाठः १ कुलुस्सियों १:१६)

"क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गयी हैं।"

१ कुलुस्सियों १:१६

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

19

इस श्रृंखला में हमने जो कुछ सीखा है उसे इस समय दोहराना महत्वपूर्ण है। यीशु ने स्पष्ट किया कि मृत्यु न तो जीवन है और न ही जीवन की किसी दूसरे रूप में निरन्तरता है।

20

(मूलपाठः यूहन्ना ११:११)

अपने मित्र के विषय जो मर गया था यीशु ने कहा, "हमारा मित्र लाजर सो गया है ..."

यूहन्ना ११:११

वह उस मनुष्य के विषय कह रहे थे जो मर चुका था। देखिए यीशु मृत्यु का वर्णन कैसे करते हैं: "नींद"। यह बाइबिल में मृत्यु की निकटतम उपमा है।

21

(मूलपाठः यूहन्ना ११:१४)

कहीं उसके चेले गलत न समझें यीशु ने साफ कह दिया कि "लाजर मर गया है।"

यूहन्ना ११:१४

लाजर कहीं और किसी दूसरे रूप में जीवित नहीं था।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

22

वह मर चुका था और उसकी देह कब्र में थी। यीशु ने और आगे साफ -साफ सिखाया कि मृत्यु के बाद पुनरुत्थान से पहले कोई जीवन नहीं है, और उन्होंने एकदम स्पष्ट कर दिया कि पुनरुत्थान अभी भविष्य में है।

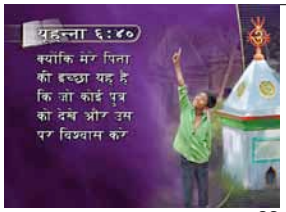

23

(मूलपाठः यूहन्ना ६:४०)

"क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे

24

अनन्त जीवन पाये और मैं उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।"

यूहन्ना ६:४०

25

प्रभु यीशु के वापस लौटने की बात जानकर हमारे हृदय आनन्द से भर उठे हैं। उनका उद्देश्य स्पष्ट है और यह जीवन और मृत्यु के विषय पर पर्याप्त प्रकाश डालता है। वे क्यों वापस आ रहे हैं?

26

(मूलपाठः यूहन्ना १४:१-३)

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।"

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

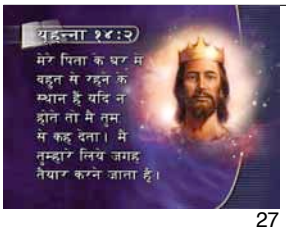

27

"मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं यदि न होते तो मै तुम से कह देता। मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ।"

28

"और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ तो फिर आकर तुम्हे अपने यहां ले जाऊँगा;

29

कि जहाँ मैं रहूँ वहां तुम भी रहो।"

यूहन्ना १४:१-३

30

यीशु ने स्वयं ही महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया:

31

(मूलपाठः मत्ती २४:३०,३१)

"तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे,

32

और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।"

33

"और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक,

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

34

चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे।"
मत्ती २४:३०,३१

35

तुरही क्यों? स्वर्गदूत क्यों?

36

चुने हुओं को मृत्यु की नींद से जगाने और उन्हें स्वर्ग में वह स्थान जो यीशु ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार किया है ले जाने के लिए एकत्र करने के लिए। प्रभु के आगमन का वर्णन बहुत साफ साफ किया गया है।

37

(मूलपाठः १ थिस्सलुनीकियों ४:१३-१८)
"परन्तु हे भाइयों हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में सोते हैं अज्ञात रहो,

38

ऐसा न हो कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं।

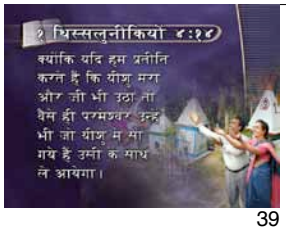

39

क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गये हैं उसी के साथ ले आयेगा।"

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

40

क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुमसे यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और

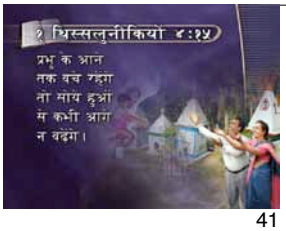

41

प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोये हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे।

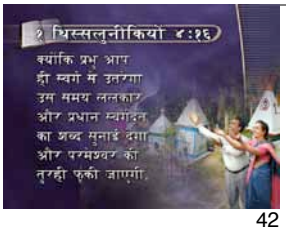

42

क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा उस समय ललकार और प्रधान स्वर्गदूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी,

43

और जो मसीह में मरे हैं वे पहिले जी उठेंगे।

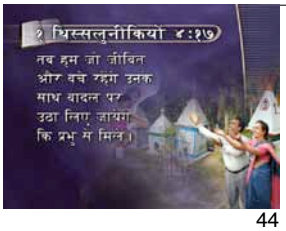

44

तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादल पर उठा लिए जायेंगे कि प्रभु से मिलें।

45

और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।

46

इसलिए इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।"

१ थिस्सलुनीकियों ४:१३-१८

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

47

कृपया यहां व्यक्त की गयी तीन विशेष सच्चाईयों पर ध्यान दीजिए:

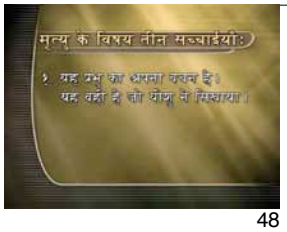

48

१. यह "प्रभु के अपने वचन" के अनुसार है।" यही यीशु ने सिखाया और इसलिए इस विषय पर हमें सन्तोष है।

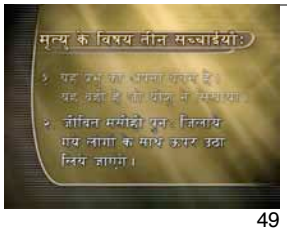

49

२. यीशु के लौटने पर जीवित पाये जाने वाले मसीही उसके दूसरे आगमन के समय मृतकों में से जीवित किये गये लोगों के साथ ऊपर उठा लिए जाएंगे। जीवित लोग उनसे आगे नहीं जायेंगे जो यीशु में सो गये हैं और न ही वे लोग जो मर गये हैं मरते समय ही एक एक कर के आगे जायेंगे।

50

३. "नींद" शब्द का प्रयोग यीशु और पौलुस ने पुनरुथान के पहले की मृत्यु के लिये किया है: "यीशु में सो गए"। यीशु यह स्पष्ट करते हैं कि मृत्यु में कोई अनुभुति नहीं होती। अनुभुति मस्तिष्क की एक प्रक्रिया है और मृत्यु में मस्तिष्क कार्य बन्द कर देता है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

51

(मूलपाठः सभोपदेशक ९:५)

बाइबिल इसे बहुत साफ करती है: "क्योंकि जीवित तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते।"

सभोपदेशक ९:५

52

मृतक कितना जानते हैं? कुछ भी नहीं।" इसलिए मृतकों का जीवितों के साथ संवाद करना असंभव है। यह विश्वास कि मृत्यु के बाद भी व्यक्ति जीवित रहता है कहाँ से आया?

53

(मूलपाठः अय्यूब ७:९, १०)

बाइबिल मृत्यु में मनुष्य की दशा को अचेत बताती है अय्यूब ने बहुत साफ कहा, "जैसे बादल छटकर लोप हो जाता है, वैसे ही अधोलोक में उतरने वाला फिर वहां से नहीं लौट सकता।"

अय्यूब ७:९

54

"वह अपने घर को फिर लौट न आयेगा, और न अपने स्थान में फिर मिलेगा।"

अय्यूब ७:१०

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

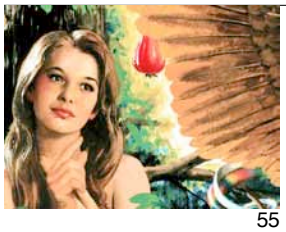
55

यह विश्वास स्वयं शैतान से आता है। उसने अदन की वाटिका में हव्वा को धोखा दिया। उसके पति सहित वह उनके वाटिका के घर को और अन्ततः जीवन को भी खो देने का कारण बना।

उसने सांप के माध्यम से बोलते हुए हव्वा के साथ एक आध्यात्मिक सभा की।

वह एक दक्ष धोखेबाज है।

56

(मूलपाठः उत्पत्ति ३:४)

उसने शैतान के झूठ पर विश्वास कियाः "...तुम निश्चय न मरोगे।"

उत्पत्ति ३:४

57

(मूलपाठः उत्पत्ति २:१७)

यह झूठ परमेश्वर के वचन के एकदम विपरीत थाः "...तू अवश्य मर जायेगा।"

उत्पत्ति २:१७

प्रश्न यह हैः कि हम किसका विश्वास करें?

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

58

एक आत्मावादी कहता है(और यही बात संसार भर के हजारों आत्मवादियों द्वारा दोहराई जाती है), "हमारे बिछुड़े हुए प्रियजनों के साथ संवाद करना संभव है।"
क्या यह सही है? नहीं।
क्या यह संभव है? नहीं।

59

यीशु की शिक्षाओं से हम निश्चित रूप से जानते हैं कि जीवित मृतकों के साथ संवाद नहीं कर सकते। क्यों नहीं? "मृतक कुछ नहीं जानते।" वे मृत्यु की अचेत नींद में सो रहे हैं।
आप कुछ भय के साथ पूछ रहे होंगे कि क्या आप आत्माओं के साथ संवाद में हैं ...

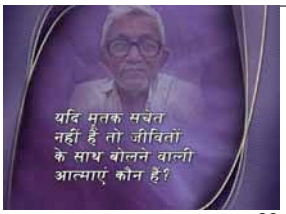

60

"यदि मृतक सचेत नहीं हैं तो जीवितों के साथ बोलने वाली आत्माएं कौन हैं?"

61

बाइबिल साफ -साफ बताती है कि वे कौन हैं:

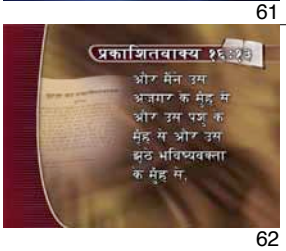

62

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:१३,१४)
"और मैंने उस अजगर के मुँह से और उस पशु के मूँह से और उस झूठे भविष्यवक्ता के मुँह से,

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

63

तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के रूप में निकलते देखा।

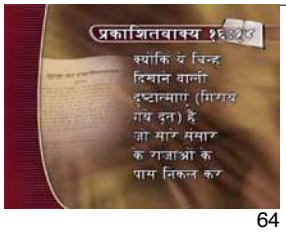

64

क्योंकि ये चिन्ह दिखाने वाली दुष्टात्माएं
(गिराये गये दूत) हैं जो सारे संसार के राजाओं के पास निकल कर इसलिए जाती हैं,

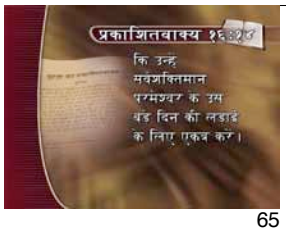

65

कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लडाई के लिए एकत्र करें।"
प्रकाशितवाक्य १६:१३, १४

66

बाइबिल आगे न केवल यह प्रकट करती है कि वे कौन है परन्तु यह भी कि वे कहाँ से आयी:

67

(मुलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:७-९)
"फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले और अजगर और उसके दूत उससे लड़े,

68

परन्तु प्रबल न हुए और स्वर्ग में उनके लिए फिर जगह न रही।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

69

इसलिए वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप जो इबलीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार का भरमाने वाला है;

70

वह पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिये गये।"

प्रकाशितवाक्य १२:७-९

71

वे गिराये गये दूत हैं! मित्रों सावधान! यह सर्वाधिक खतरनाक है कि आप इन आत्माओं से कुछ भी लेना देना रखें।

उनका एक मात्र उद्देश्य मैं दोहराता हूँ, उनका एक मात्र उद्देश्य आप को भरमाना है और आप को यीशु से दूर ले जा कर आपके अनन्त उद्धार से आपको वंचित करना है।

72

इससे आपके रोंगटे खड़े हो जाने चाहिए। आपके शरीर में सिहरन पैदा होनी चाहिए। ताकि आप अपने और आत्माओं के बीच दूरी पैदा रखें। यदि आप विश्वास करते हैं कि मृतक जीवित हैं तो आप पूरी तरह असुरक्षित हैं और धोखे से नाश हो सकते हैं क्योंकि अभी तक आपने कुछ भी नहीं देखा है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

73

परमेश्वर ने अपने वचन में आत्मावाद की स्पष्ट निन्दा की है, और मनुष्य की ओर से मृतकों के साथ संवाद करने के किसी भी प्रयास को वर्जित ठहराया है।
इस चेतावनी पर ध्यान दीजिए जो परमेश्वर ने अपने लोगों को ऐसे व्यक्ति के पास जाने के विषय में दी जो जानी पहचानी आत्मा से बात करने का प्रयास करता है

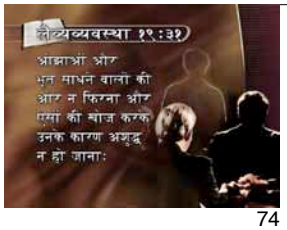

74

(मूलपाठः लैव्यव्यवस्था १९:३१)
लैव्यव्यवस्था १९:३१: "ओझाओं और भूत साधने वालों की ओर न फिरना और ऐसों की खोज करके उनके कारण अशुद्ध न हो जाना:

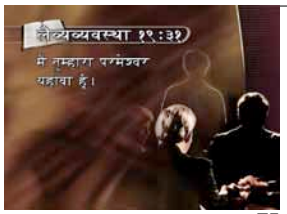

75

मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

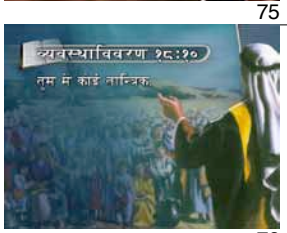

76

(मूलपाठः व्यवस्थाविवरण १८:१०-१२)
कनान में प्रवेश करने से पहिले इस्राएलियों को कठोर निर्देश दिये गये, "तुम में कोई तान्त्रिक,

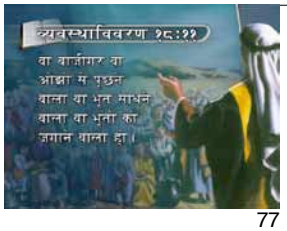

77

वा बाजीगर वा ओझों से पूछने वाला वा भूत साधने वाला वा भूतों को जगाने वाला हो।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

78

"क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित है..."

व्यवस्थाविवरण १८:१० -१२

परमेश्वर जानता है कि भूतों को जगाने वाले लोग उसके लोगों को पथभ्रष्ट कर देंगे, और इसलिए उसने उनसे ऐसा कहा:

79

(मुलपाठ: निर्गमन २२:१८)

"तू डाइन को जीवित रहने न देना।"

निर्गमन २२:१८

80

राजा शाऊल का भूत सिद्धि करने वाली से सम्मति लेने का अनुभव, मृतकों से बात करने की मूर्खता को दिखाता है।

81

(मूलपाठ: १ इतिहास १०:१३)

"यों शाऊल उस विश्वासघात के कारण मर गया, जो उसने यहोवा से किया था ...

82

और उसने भूत सिद्धि करने वाली से पूछकर सम्मति ली थी।"

१ इतिहास १०:१३

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

83

शैतान स्वयं यीशु का रूप धारण करने की चेष्टा करेगा।

84

(मूलपाठः २ कुरिन्थियों ११:१४)
"और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं, क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रुप धारण करता है।"
२ कुरिन्थियों ११:१४

85

क्या आपने सोचा है कि एक व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति के साथ कैसे बात कर सकता है जो ठीक वैसा ही दिखता है बात करता है, काम करता है जैसा वह मृत्यु के पूर्व था?
बाइबिल कहती है कि यह शैतान और उसके दूतों के छदम वेश से होता है।

86

वे ऐसे किसी भी व्यक्ति का रुप धारण कर सकते हैं जो कभी जीवित रहा। यह सोचना पूरी तरह भयभीत करने वाला है कि भले लोग भी इस तरह धोखे से शैतान के आलिगन में यह सोचते हुए आ सकते हैं कि वे अपने बिछुड़े हुए प्रियजन का आश्वासन प्राप्त कर रहे हैं।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

87

किन्तु यह वचन और भी अधिक दुष्टता को प्रकट करता है: शैतान स्वयं यीशु का रुप धारण करेगा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यीशु के दूसरे आगमन की सच्चाई न जानने के कारण कैसे भीड़ की भीड़ धोखा खायेगी?

क्या इसमें कोई आश्चर्य है कि यीशु ने इसी बात पर इतनी गंभीर चेतावनी दी है?

88

(मूलपाठ: मत्ती २४:४,५)

"और यीशु ने उनको उत्तर दिया, सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाये।"

89

"क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे कि मै मसीह हूँ और बहुतों को भरमायेंगे।"

मत्ती २४:४,५

इतना गंभीर है यह विषय कि

90

यीशु ने वही चेतावनी उसी उपदेश में फिर दोहरायी:

91

(मुलपाठ: मती २४:२३-२५)

"उस समय यदि कोई कहे, देखो, मसीह यहाँ है! तो प्रतीति न करना।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

92

"क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखायेंगे,

93

कि यदि हो सके, तो चुने हुओं को भी भरमा दें।"

94

"देखो, मैंने पहिले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है।"

मत्ती २४:२३-२५

95

किन्तु कोई कह सकता है या आप किसी ऐसे को जानते होंगे जो कहता है, "मैंने एक बिछुड़े हुए प्रियजन को जीवित देखा है।"

96

कोई और हठ कर सकता है, "मैंने अपने बिछुड़े पति से बात की है।"

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

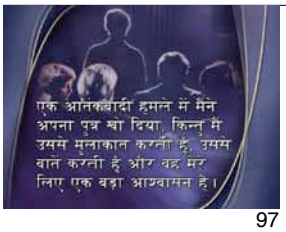

97

एक और, "एक आतंकवादी हमले में मैंने अपना पुत्र खो दिया, किन्तु मैं उससे मुलाकात करती हूँ, उससे बातें करती हूँ और वह मेरे लिए एक बड़ा आश्वासन है।"

यीशु ने क्या कहा?

कि मृतक नींद में है और ये आत्माएं यदि हो सकता तो चुने हुओं को भी भरमायेंगी।

लाखों लोग धोखा खायेंगे।

क्यों? क्योंकि वे अपनी भावनाओं इन्द्रियों और अनुभवों पर परमेश्वर के वचन से बढ़कर भरोसा रखते हैं।

98

चुने हुए लोग धोखा नहीं खाते हैं? क्योंकि वे यीशु पर विश्वास रखते हैं अपनी इन्द्रियों, भावनाओं और अनुभवों पर भरोसा रखने के बजाय वे परमेश्वर के अटल वचन पर भरोसा रखते हैं।

99

प्रश्न यह है:

100

क्या हम परमेश्वर की सच्चाई को स्वीकार करेंगे,

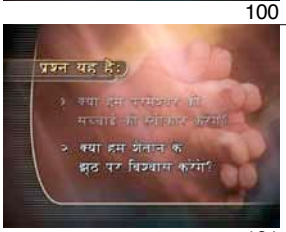

101

क्या हम शैतान के झूठ पर विश्वास करेंगे?

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

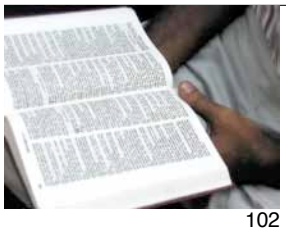
102

शैतान के धोखे की लहर सारे संसार को प्रभावित करने लगी है। केवल वे ही इस धोखे की लहर के सामने टिक सकेंगे जिन्होंने बाइबिल के वचनों से अपने मस्तिष्क को सुरक्षित कर लिया है।

हमें ये बातें जाननी चाहिए और उन पर दृढ इच्छा से विश्वास करना चाहिए और किसी अनुभव, भावना या दिखावट को हमें सच्चाई से नहीं हटाने देना चाहिए।

103

संभवतः आपने "निकट मृत्यु" के अनुभव के विषय में सोचा है जिसमें वे लोग जिन्हें मृत घोषित कर दिया गया थो पुनः जीवित हो गये हों

104

और उन्होंने कहा कि उन्होने स्वयं को अस्पताल कक्ष में मण्डराते और अपने ही शरीर को निहारते पाया...

105

या उन्होंने एक तेज प्रकाश और यीशु को देखा या एक स्वर्गदूत को जो उनसे आने का आवाहन कर रहा था। कुछ तो यहाँ तक कहते हैं कि उन्होंने मृत्यु के उस पार अपने बिछुडे हुए प्रियजन को देखा है।

हम केवल परमेश्वर के वचन की सच्चाई के साथ ही झूठ को पकड़ सकते हैं और धोखे से सुरक्षित हो सकते हैं।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

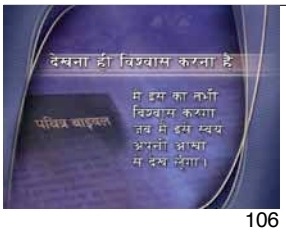

106

यह कहना कि, "देखना ही विश्वास करना है - मैं इस का तभी विश्वास करुंगा जब मै इसे स्वयं अपनी आखों से देख लूँगा," भरमाये जाने का एक निश्चित मार्ग है।

107

हमारा निर्णय प्राण घातक हो सकता है अगर यह निर्णय परमेश्वर के वचन बाइबिल पर आधारित न हो कर हमारी इन्द्रियों, भावनाओं, यो अनुभवों पर आधारित हो।

मृत्यु के विषय में बहुत अधिक झूठे विश्वास संसार भर में प्रचलित हैं।

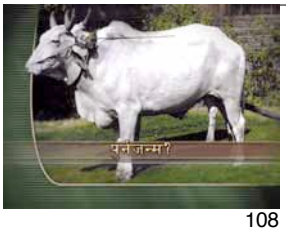

108

उदाहरण के लिए पुर्नजन्म को ले लीजिए।

लाखों का विश्वास है कि जब एक व्यक्ति मरता है, तो वह किसी दूसरे रुप में पुनः जन्म लेता है, फिर भी कभी नहीं जान पाता कि किसमें। यह संभवतः एक पशु जैसे एक गाय, चूहा या सांप भी हो सकता है।

109

या एक दूसरा व्यक्ति हो सकता है। संभवतः बहुत अमीर, या एक राजा या निर्धन या एक भिखारी या अन्धा या बहरा या लँगड़ा या जिसे एक दर्दनाक और असहाय बीमारी हो।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

110

हिन्दू मत सिखाता है कि जीवन एक चक्र है जो निरन्तर घूमता रहता है, और जब एक व्यक्ति मरता है तो वह पुनः जन्म लेता है और इस पृथ्वी पर इसके अनन्त चक्र चलते रहते हैं।

इसके पीछे वास्तविक सोच-विचार को जाने बिना बहुत से लोग इस षडयन्त्र में फंस जाते हैं।

इस विश्वास में व्यक्ति का कोई नियन्त्रण नहीं, कोई चुनाव नहीं, कोई निर्णय नहीं रह जाता।

111

यहाँ लक्ष्य व्यक्ति, चुनाव, आनन्द और मित्रता के साथ सचेत जीवन नहीं है। फिर भी व्यक्ति अन्त में निर्वाण को प्राप्त होता है –

112

"एक शान्तिपूर्ण शून्य की दशा, जिसमें कोई व्यक्तित्व नहीं, कोई ज्ञान नहीं, कोई यादगार नहीं,

113

एक व्यक्ति जैसे आप भी नहीं सोचने प्रेम करने और सचेत आनन्द प्राप्त करने की कोई क्षमता भी नहीं।

114

स्वयं की पहचान ब्रह्माण्ड में पूरी तरह विलुप्त हो जाती है कि वैसे ही जैसे पानी की एक बूंद समुद्र में जाकर विलीन हो जाती है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

115

बुद्धावाद भी ऐसा ही है।
तब भी बुद्धा ने सिखाया कि आप जीवन के अन्त में जीवन चक्र से छुटकारा पा सकते हैं अर्थात यदि आपके कर्म ठीक हैं तो आपको पुर्नजन्म के अनन्त चक्र से होकर जाना नहीं पड़ेगा।

116

इच्छा के अचेतन नियन्त्रण द्वारा शिक्षा स्वीकार कर एक व्यक्ति अपने जीवन में ऐसे बिन्दु पर आ सकता है, जहाँ इच्छा का पूर्णतया ठहराव है।

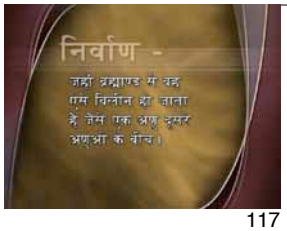

117

जब मन और देह की यह स्थिति प्राप्त हो जाती है, वह मृत्यु के समय सीधे निर्वाण को प्राप्त हो जाता है, जहाँ ब्रह्माण्ड से वह ऐसे विलीन हो जाता है जैसे एक अणु दूसरे अणुओं के बीच।

118

इन दोनो मुख्य धर्मो के पास यह विश्वास भी है कि अच्छाई और बुराई समान शक्तियाँ हैं और अनन्त काल तक बनी रहेगी।

119

इण्डोनेशिया में बाली के टापू पर बारोंग नृत्य देखा जा सकता है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

120

बारोंग एक उबले हुए बड़े अण्डे के आकार की पोशाक पहने छः आदमियों का सामना करता है जो कटार धारण किये हुए होते हैं ये टेडी किन्तु तेज और प्राण नाशक कटारें होती हैं। वे किसी स्थानीय और औषधि के प्रभावाधीन होते हैं।

121

बारोंग उनकी ओर बढ़ता है और वे पीछे हटते हैं। वह संकोच करता और पीछे मुड़ता है और वे आदमी हवा में वार करते हुए और उसे काट डालने का प्रयास करते हुए उसके पीछे दौडते हैं।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

122

बारोंग रूक जाता और उन आदमियों का सामना करने के लिए मुड़ता है। वे रूक जाते हैं। वह एक कदम आगे बढ़ता है और वे एक कदम पीछे हटते हैं।

यह क्रम आगे पीछे बार -बार तब तक चलता रहता है जब तक कि छः आदमी उन मांद की प्रचंड स्थिति में फँस कर नियन्त्रण नहीं खो देते हैं। उनमें से एक या अधिक के लिए आसामान्य नहीं है कि वे पास खडे लोगों पर अपनी कटार फेंक दें और भल्ली से उन पर वार कर दें।

इस बिन्दु पर गांव से आदमी आकर उन पर नियन्त्रण कर भूमि पर गिरा कर पानी डालते हैं जबकि वे मरोड़ खाते रहते हैं।

अन्त में वे इस प्रकार अपने सिर हिलाते हैं मानो अचेतावस्था से निकलें हो और अपनी झोपडियों की ओर चले जाते हैं। और बारोंग विपरीत दिशा में चला जाता है। इसका क्या मतलब है। यह एक धार्मिक पर्व है जिसमें लोग अपने विश्वासों का मंचन करते हैं। बारोंग परमेश्वर का प्रतीक है और छः आदमी बुराई के प्रतीक हैं। हिन्दू विश्वास के अनुसार अच्छाई और बुराई के मध्य में सनातन संघर्ष चलता रहता है। दोनों में से कोई भी नहीं जीतता है यह सदैव बराबरी पर छूटता है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

123

यह इस विश्वास पर आधारित है कि इतिहास चक्रवत है अर्थात यह निरन्तर स्वयं को ही दोहराता रहता है। इतिहास कहीं नहीं जा रहा है।

प्रेम का कोई अनन्त परमेश्वर नहीं है जो बुराई को समाप्त करे और पृथ्वी पर धार्मिकता और शान्ति की स्थापना करे।

124

पुनरुत्थान और जीवन के लिए मैं यीशु का बहुत आभारी हूँ। क्या आप नहीं हैं?

कितनी अदभुत आशा वे लाते हैं!

बुराई सदैव बनी न रहेगी। इतिहास चक्रवत चलने वाला नहीं है। यह आगे बढ़ रहा है।

सम्पूर्ण इतिहास ऐसे समय की ओर बढ़ रहा है जब परमेश्वर लोगों के लिए एक नई पृथ्वी का निर्माण करेगा – ऐसी पृथ्वी, जिसमें पाप, बिमारी, युद्ध, भुखमरी, दु:ख और मृत्यु न रहेगी।

125

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य २१:१-)

"फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

126

और समुद्र भी न रहा।

127

"फिर मैंने पवित्र नगर नए यरुशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा,

128

और वह उस दुल्हन के समान थी जो अपने पति के लिए सिंगार किये हो।"

129

"फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में हैं

130

वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा।"

131

"और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा और इसके बाद मृत्यु न रहेगी और न शोक न विलाप।

132

न पीड़ा रहेगी पहिली बातें जाती रहीं।"

प्रकाशितवाक्य २१:१-४

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

133

क्या आप अभी यीशु को चुनेंगे और नया जन्म प्राप्त करेंगे? मृत्यु के बाद नहीं, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। न ही लाखों वर्षों तक जीवन के अनेक रूपों में और असंख्य पुर्नजन्मों में। किन्तु अभी और आज ही!

134

(मूलपाठः १ पतरस १:३,४)
"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो,

135

अपनी अपार दया के अनुसार एक जीवित आशा के लिए हमें नया जन्म दिया

136

यीशु मसीह के मृतकों में से जिला उठाने के द्वारा,

137

कि उस उत्तराधिकार को प्राप्त करें जो अविनाशी निष्कलंक और अमिट है,

138

जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है।"
१ पतरस १:४

139

आप अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं। परमेश्वर चाहता है कि आप आज यह आश्वासन प्राप्त करें।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

140

(मूलपाठः १ यूहन्ना ५:११,१२)

"और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उसके पुत्र में है।

141

"जिस के पास पुत्र है उसके पास जीवन है और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।"

१ यूहन्ना ५:११,१२

हम कैसे जानते हैं? हम कैसे निश्चित हो सकते हैं? परमेश्वर का वचन इसे स्पष्ट करता है:

142

(मूलपाठः १ यूहन्ना ५:१३)

"मैंने तुमको को जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा हैं,

143

कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है..."

१ यूहन्ना ५:१३

प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रश्न का उत्तर देना ही चाहिए:

"क्या यीशु मेरे पास है?"

आप उसे इसी क्षण पा सकते हैं।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

144

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ३:२०)

वह कहता है, "देख मैं (तेरे हृदय के) द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ।

145

यदि कोई मेरी आवाज सुनकर द्वार खोले,

146

तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ।"

प्रकाशितवाक्य ३:२०

147

अपने हृदय के द्वार को अभी खोलिये और यीशु को अन्दर बुलाइए।